Rs. 15/-

Readers' Club Bulletin

रीडर्स क्लब बुलेटिन

nbt.india
एक: सूते सकलम्

Vol. 25, No. 01, February 2020

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
रीडर्स क्लब बुलेटिन

Vol. 25, No. 01, February 2020 **वर्ष 25, अंक 01, फरवरी 2020**

Chief Editor / मुख्य संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Editor / संपादक
Dwijendra Kumar
द्विजेन्द्र कुमार
Assistant Editor / सहायक संपादक
Dr. Kamlesh Kumari
डॉ. कमलेश कुमारी
Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator / चित्रकार
Partha Sengupta
पार्थ सेनगुप्ता

Printed and published by Mr. Anuj Kumar Bharti, Assistant Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted and *Printed* at Aravali Printers & Publishers (P) Ltd., Okhla Ind. Area, Ph-II New Delhi.-20

In This Issue

Contents सूची

Children's Literature Activities ...		03
देश के पहले नेशनल पार्क में	रजनीकान्त शुक्ल	04
प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई	दिनेश चमोला "शैलेश"	06
Let's Play Holi	Monika Agarwal	07
Rat & Cat	Shravan Kumar Seth	09
शेर की हार	सुरेन्द्र श्रीवास्तव	10
Andy Ka Ek Din	Chaitanya Raghav	14
Golden Earth	Dr. Shashi Goyal	15
डर के आगे जीत	पवन कुमार वर्मा	16
This Beautiful Place	Yash Tandon	19
Baul Dance	Banani Sarkar	20
एक से बढ़कर एक	विमला भंडारी	21
Story of Sajjangarh ...	Pulkit Upadhyay	24
Our Environment	R.N. Kabra	25
समझदार लड्डू	चेतना उपाध्याय	26
Dadi's Cellphone	Deepa Agarwal	28
Trying and Crying	Arshita Parhi	32
Judgement of Yama Dharma	Aramudan Iyengar	33
गरम हवा की धूप	कमल सिंह चौहान	34
Book Review		35

Editorial Address संपादकीय पता
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस–II, वसंत कुंज, नई दिल्ली–110070
E-Mail (ई–मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy / एक प्रति ₹15.00 Annual subscription / वार्षिक ग्राहकी : **₹ 50.00**
Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**
कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।
This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.
यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निःशुल्क वितरित किया जाता है।

Children's Literature Activities at New Delhi World Book Fair 2020

National Centre for Children's Literature (NCCL) is working continuously towards promotion of books and reading habit amongst children and with the same objective, it organised a number of events at Children's Pavilion during New Delhi World Book Fair held at Pragati Maidan from 4 to 12 January, 2020.

On the commencing day of NDWBF-20, a workshop on Adivasi Bal Kahani Vachan/ Chitrakala was conducted by Janjatiya Shodh Evam Vikas Sansthan, Varanasi as also a programme on Publishing for Children: Trends & Oppurtunities wherein panelists were Mrinal Chatterjee, Anurima Roy and Pranav Kumar Singh. On 5th January 2020, a session on 'Lets Make a Play' was conducted by Kusumlata Singh and Suman Kumar. A session on Tribal Stories & Illustrations was also held. Tamsili Mushaira and Kavi Sammelan by CAFP, India and a Panel Discussion on ' What is a Good Book' by Parag, an initiative of Tata Trust too were organised.

On 6th January 2020, Stories on Bapu and On-the-spot Quiz Competition and a Panel Discussion on "Igniting the Young Children's Mind through the Libraries : Role of LIS Professionals" were held by DELNET as also workshops on Meri Dus Ungliyan/ Screen Painting & Paper Meshes/ Mask Making by Apna Kona Creative Foundation. On 7th January 2020, few activities like Interactive session with noted children's writers, Slogan writing/ poster making , a skit on good manners and happiness in life and a panel discussion on 'Junk Food and Eating right' were organised by Sahitya Akademi, Kids Motivational Group, Meeraj Kids World and Akriti Publishers.

On 8th January 2020, a digital storytelling session and a programme on north east stories were held. A session on letter writing by Happy Horizons Trust and Nav Prabhat Jan Sewa Sansthan, a programme on "Rights of Children" by Law 24x7 and a panel discussion on Mahatma Gandhi's Writings By DSBPA were also held. On 9th January 2020, a workshop on Let's Draw Gandhi and Story Weaving by Darshan Academy, a play 'Par Hame Khelna Hai' by Wonderoom, Rajiv Gandhi Foundation and a Meet with Bravery award winning children by Sarvodaya Bal Vidyalaya, Rouse Avenue were also held.

On 10th January 2020, a workshop on Reading Out Stories was conducted by Shiv Mohan Yadav, Sushma Yaduvanshi and Asha Sharma. A skit by Jai Shankar Memorial and panel discussion on 'Children's Literature Goes Digital' by Worldreader were also organised. On 11th January 2020, a workshop on 'Sport Fiction: Can Write can Play' conducted by Ajay Verma and Sangeeta Sethi, a 'Scientoon Workshop' and a panel discussion on 'Communicating Science through Science Communicators' by NISCAIR and a Musical Storytelling and discussion on 'Storytelling in Primary Classrooms' were organised by Story Ghar.

On the last day, a storytelling session on Girl Child was conducted by Vikash Dave, Manjari Shukla and Rumi Malik. A programme on singing and narrating motivational lines in Sanskrit, Hindi etc by Divya Jyoti Jagrati Sansthan, Nukkad Natak on 'Pradushan ki Samasya' by Chetna India and a conference on Children's Poets by Wonderoom, Rajiv Gandhi Foundation were also held.

Leading organisations which conducted events included big names as Parag, an initiative of Tata Trust, DELNET, Sahitya Akademi, Akriti Publishers, Wonderooom, Rajiv Gandhi Foundation, Worldreader, NISCAIR, Chetna India etc. Parag, Riaz and NIEPVD, Dehradun displayed their latest creations for children too.

यात्रा वृत्तांत

देश के पहले नेशनल पार्क में

रजनीकान्त शुक्ल

"सर जी, हम जिम कार्बेट पार्क कब जाएँगे?" गोविन्द ने जब अपना अमर वाक्य आज फिर दोहराया तो सर के चेहरे पर मुस्कराहट तैर गई।

वे हँसकर बोले, "तुम्हारे नामों की लिस्ट जा चुकी है जब भी जाने की सूचना आएगी तुम्हें तुम्हारी कक्षा में आकर मैं चलने की कहूँगा। हम अकेले तो नहीं जाएँगे।"

यह सुनकर गोविन्द अपनी कक्षा की ओर उदास होकर चल दिया।

सरकार की ओर से स्कूली बच्चों को जिम कार्बेट या सरिस्का में से किसी एक जगह घुमाने के लिए आदेश आया था जिसमें गोविन्द के स्कूल के नवीं कक्षा के चालीस बच्चों को जाना था। सारे बच्चे उसे रोज उकसाते, "पूछ पूछ तू ही सर जी से पूछ कब चलना है हमें..."

आज भी वैसा ही हुआ था। अर्ध वार्षिक परीक्षाएँ आने वाली थीं। उसके बाद सर्दी की छुट्टियाँ समाप्त होकर जैसे ही स्कूल खुले एक दिन सर ने बताया कि फरवरी की आने वाली बाईस तारीख को हमारा स्कूल जिम कार्बेट नेशनल पार्क जाएगा। जाने के लिए चुने गए बच्चे बेहद खुश थे। माता–पिता की अनुमति मिलने के बाद साथ लेकर जाने वाले सामान की व्यवस्था करते–करते आखिर जाने वाली तारीख आ ही गई।

उस दिन सुबह बच्चों के माता–पिता उन्हें विदा करने स्कूल के बाहर इकट्ठे थे। सभी हँसी खुशी बस में बैठे। सबके मन में टीवी चैनलों पर दिखाए जाने वाले दृश्य घूम रहे थे। पता नहीं कैसा होगा वो जिम कार्बेट पार्क जिसमें हमारे देश के प्रधानमंत्री जी भी मैन वर्सेज वाइल्ड वाले वेयर ग्रिल के साथ जा चुके हैं। हमारी किन–किन जानवरों से भेंट होगी।

स्कूल से चलकर बस दिल्ली की सीमा को पार करती हुई जल्दी ही उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर गई। सभी बच्चे बस में गाने गाते हुए मस्ती करने लगे। कुछ घंटों के बाद बस हाईवे से लगे एक ढाबे पर रुकी। बच्चे चाय वगैरह पीकर फिर से आगे चल दिए।

लंच के समय तक वे सभी रामनगर नैनीताल के 'अरण्या द कानन' रिज़ार्ट में पहुँच गए। खाने का समय था। जल्दी ही पहले से बुक किए गए कमरों में सामान रख कर वे खाने के लिए आ गए। खाना खाकर सभी ने रिज़ार्ट का चक्कर लगाया। वह बहुत बड़े दायरे में फैला हुआ था। उसमें शानदार कमरे, स्वीमिंग पूल, बड़ा हरा–भरा मैदान था। कुछ देर आराम करने के बाद वे सभी तय कार्यक्रम के मुताबिक ढिकुली गाँव के निकट प्रतीक्षा नदी के किनारे गर्जिया देवी के मंदिर की ओर चल पड़े।

रास्ते में जगह–जगह बोर्ड लगे हुए थे कि यह बाघ बहुल इलाका है। कहीं लिखा था–ये हाथी बहुल क्षेत्र है। वाहन धीमी गति से चलाएँ। यहाँ वाहन न रोकें। बच्चे खिड़कियों से झाँक–झाँक कर देख रहे थे। मगर कुछ बंदर और हिरनों को छोड़कर अन्य किसी जंगली जानवर के उन्हें दर्शन नहीं हुए। गोविन्द और उसके दोस्तों ने सर से पूछा, "हम जिम कार्बेट कब जाएँगे?"

सर ने बताया, "हम जिम कार्बेट पार्क इलाके में ही हैं। तुम लोग ये बोर्ड नहीं देख रहे हो? यहाँ आदमी हैं। सड़क है इसलिए जानवर इस ओर नहीं आते हैं। वे अपने इलाके में ही रहते हैं। जिम कार्बेट लगभग पाँच सौ बीस वर्ग किलोमीटर में फैला है।" कुछ ही देर में वे लोग प्रतीक्षा नदी के किनारे बने गिरिजा देवी के मंदिर के पास पहुँच चुके थे। जिसे स्थानीय लोग गर्जिया देवी का मंदिर कहते हैं। अँधेरा होने वाला था इसलिए सबसे पहले पुल पार करके नदी के किनारे जा पहुँचे। छल–छलकर बहते पानी में पैर डालकर, उसमें पत्थर फेंककर सबने मजे लिए।

मंदिर में दर्शन करके वहाँ से बस में बैठकर वे सब वापस चल दिए। अँधेरा हो चुका था। बस के शीशों से बाहर का नजारा ज्यादा दिख नहीं रहा था इसलिए बच्चों ने आपस में ही मस्ती करने की सोची। उन्होंने गाने गाना शुरू कर दिया। एक के बाद एक हरियाणवी, भोजपुरी और हिंदी गाने बच्चों के सामूहिक स्वर में गूँज उठे। जल्दी ही सब रिज़ार्ट में पहुँचे और खाना खाकर बोनफायर एरिया में गए। जहाँ जलती हुई आग के चारो तरफ सारे बच्चे काफी देर तक नाचते–गाते रहे। जब वहाँ मन नहीं भरा तो कमरों में भी वे धमाल मचाते रहे।

अगले दिन सुबह नाश्ता करके उनकी बस कालाडूँगी की ओर चल दी। जहाँ छोटी हल्द्वानी में जिम कार्बेट का घर था जिसे अब वन विभाग ने एक संग्रहालय का रूप दे दिया था। एक बड़े इलाके में फैला जिम कार्बेट का घर उनकी स्मृतियों से सज़ा हुआ था। इसमें उनके हाथ से बनाए गए मेज, कुर्सी, उनकी लिखी किताबें, उनके तमाम चित्र और उनकी बहन की यादें भरी हुई थी। यहाँ तक कि उनके दोनों कुत्तों की समाधियाँ भी मुख्य द्वार के निकट बनी हुई थीं। जो उनके साथ शिकार पर जाया करते थे। यही नहीं उन्होंने कई मर्तबा जिम कार्बेट के प्राणों की रक्षा भी की थी।

यही सब देखते समझते सारे बच्चे वहाँ से विदा हुए। उन्होंने वहाँ अनेक फोटो खींचे और वीडियो भी बनाए। जिसको शुभम और निखिल ने संपादित करके सुंदर न्यूज रील का रूप दे दिया। विद्यालय में गणतंत्र दिवस के अवसर पर होने वाले कार्यक्रम के बीच जब उन्होंने अपने इस यात्रा वृत्तांत को प्रोजेक्टर के जरिए बड़े पर्दे पर दिखाया तो सभी वाह! वाह! कर उठे।

सर्वोदय विद्यालय, राउज एवन्यु, दिल्ली

प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई

दिनेश चमोला "शैलेश"

आँगन–आँगन फूल खिले हैं
पीली सरसों है मुस्काई
भँवरे, तितली, खग–विहगों ने
मृदु स्वर में बासंती गाई
कली–कली में खुशियाँ फूटी
सुरभित कर, बहती पुरवाई
प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई!

कष्ट–ताप सह धरती माँ ने
नव रस दे उपवन महकाए
रंग–बिरंगे पुष्प पात रख
पूजा हित बहु थाल सजाए
माँ वाणी ने खुश हो कितने
मन क्यारी में भाव जगाए
प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई!

अलसाई थी सकल धरा जो
उसमें नव उत्साह भरा है
सहमा–सकुचाया पतझड़ है
कष्ट, शोक सब बहुत डरा है
आँगन–आँगन फूलों ने खिल
शोभा सबकी खूब बढ़ाई
प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई!

कर श्रृंगार ज्यों माँ धरती ने
जग का यह आँगन महकाया
शब्द–पुष्प से माँ वाणी ने
नव रसमय मृदु साज बजाया
देवलोक से भी सुंदर भू
यह कह जीवन प्रीति सिखलाई
प्रिय बसंत की मधु ऋतु आई!

अध्यक्ष, हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय
157, गढ़ विहार, फेज–1, मोहकमपुर
देहरादून–248005 (उत्तराखण्ड)

Let's Play Holi

Monika Agarwal

Sonu, a small rabbit, wanted to help his forest dwellers. The only problem he faced was that he did not know what to do. Everyone was afraid of Sher Singh as he was too aggressive.

Sher Singh used to trouble other animals. He kept making new rules. All animals were concerned about the lion's impulsive behaviour. One day, he passed a new rule that no one would play Holi in the forest, as Sher Singh himself was much afraid of water. He also announced that if any other animal was found playing Holi then they would get the harshest punishment.

All the animals used to tremble upon hearing his name.

"How long will we be fearing Sher Singh?" Sonu raised the question in front of everyone.

"What should we do son Sonu? If Sher Singh so desires, he can eat all of us at once. We are subjects of the king," an old elephant said with tears in his eyes.

"So we will never be able to make up our mind. What is the use of such a life? Why don't we all move somewhere else?" asked Sonu.

"Is this so easy Sonu", his grandfather said.

"Do you think Sher Singh will let us leave this forest like this?"

"Then it is better to become his food instead of living such a terrible life," Sonu told them.

"But who would like to go into the mouth of death knowingly, Sonu", Mini squirrel joined in the discussion. "So why don't we all attack and kill him together? What will happen? How many will be injured? At most two to four people. But the next generation will be saved from this agony," Sonu suggested.

"But who is ready to bell the cat and in the process ready to sacrifice his life?" All the animals silently bowed their heads.

"Enough now. How long will we be afraid like this? Is this a life?," Sonu's face truned red with anger. He just wanted to play Holi this time. He had been too excited to play Holi since he watched Holi on television. Chiku Rat, Tuk-Tuk Bird, Meeku Monkey and all other children were feeling so bad. Kaku Elephant, Munna Bear, Meenal Maina, Meetu Fox and Dinu Donkey too looked sad.

"What will happen by being upset now, Kaka? Why we intelligent animals cannot do anything?"

"So we will be just sitting like this?" Sonal Turtle asked.

"No, we now have to do something," Sonu stood up looking determined.

"But what? Everyone looked at him."

"We have to prepare a pit. How long will it take, just one day?"

"Yes," everyone responded at the same time. "But what to do?"

"Well, listen carefully and follow it," Sonu started explaining to them his plan.

When for next two days, Sher Singh didn't see anybody, he started feeling restless. 'What is going on? Where has everyone gone? Something is fishy?' When he called out for Mamu the wolf, he was also found missing. When the black cat was called, she too did not come.

'Let's see for myself,' he thought. 'Anyways today it is a sunny day. But where do I go first?'

'Let's first go to Sonu Rabbit's house because he is the most naughty. Maybe a clue can be found from his house.' As soon as he reached Sonu's place, he felt like as if he was falling into a deep ravine. He shouted, "Oh hey, this is a crater full of water". Soon

he felt something falling over him, and when he looked carefully, it were water filled balloons full of colours and tesu flowers. All animals said together, "Don't mind, it is Holi today." Sher Singh got very angry.

The water had come up to his neck. "Will you dig my grave?" All the animals started laughing. The Black Cat said, "Maharaj, please first promise that you will not be angry when you come out." Mamu Wolf also said, "Yes Maharaj, we will help you only when you promise that you will not get angry with anyone"! "Yes Promise; I will not say anything to anyone; and I am having a party at my house this evening! You all have to come!"

"Believe me... I was afraid of water, for no reason, but now, I too am liking it. Now I understand why all of you were not being seen for last 2 days".

On hearing this, all the animals smiled and everyone together got Sher Singh out of the ditch. As promised, Sher Singh did not say anything to anyone and announced that every year Holi will be celebrated with much love and pomp.

That time too, Sher Singh gave everyone a very good feast. All were cheering Sher Singh and praising Sonu's prudence.

Kumar Kunj, GMD Road
Moradabad -244001 (U.P.)

Rat & Cat

Shravan Kumar Seth

Rat rat rat
Looking my fat?

Going to the market
Wearing a hat.

His legs were
Shivering with fear
Seeing a cat to him very near.

Rat rat rat
Cried the cat
Today is my fast
Don't get lost.

MSA 201 Type 3 Multistory, Sachiwalay Colony, Mahanagar, Lucknow-226006(U.P.)

शेर की हार

सुरेन्द्र श्रीवास्तव

एक बहुत बड़ा जंगल था। उस जंगल में एक शेर रहता था। वह बहुत बलशाली था। जंगल के सारे जानवर उससे थर्राते थे। एक छत्र राज्य होने के नाते वह शेर जंगल के छोटे जानवरों को अक्सर परेशान किया करता था। कई जानवरों ने उस शेर को समझाने की कोशिश की, लेकिन शेर था कि अपनी आदत से मजबूर था। वह किसी की बात मानने को तैयार ही न था।

आखिर एक दिन उस जंगल के सारे जानवरों ने मिलकर एक सभा आयोजित की। इस सभा में इस बात पर विचार किया गया कि शेर की छोटे जानवरों को परेशान करने की आदत को कैसे छुड़ाया जाए? सीधे रूप से कहने पर तो शेर अपनी आदत से बाज आने वाला नहीं था, इसलिए वे लोग शेर को सबक सिखाने के लिए दूसरे उपायों के बारे में सोचने लगे। खरगोश द्वारा कुएँ में दूसरा शेर होने की बात कहकर कुएँ में झाँकने के बहाने शेर को उसमें कुदवाने का तरीका पुराना पड़ गया था। यही नहीं, शेर उस तरीके के बारे में जानता भी था। इसलिए किसी नए उपाय की तलाश करनी थी।

सभा में कई तरह के विचार प्रस्तुत किए गए, लेकिन सभा को कोई विचार पसंद नहीं आया। बहुत देर तक सोचते–सोचते मैकू गधे को एक उपाय सूझा। उसने अपनी ढेचूँ–ढेचूँ की आवाज में खड़े होकर कहा, "मेरा विचार है कि मैं शेर से युद्ध करूँ। मेरे द्वारा पराजित होने पर शेर यहाँ के जानवरों को परेशान करना अपने आप बंद कर देगा, ऐसा मेरा विश्वास है।"

मैकू गधे की बात सुनकर सभा में उपस्थित सब लोग हँस पड़े। लोमड़ी व्यंग्य से बोली, "तुम शेर से युद्ध करोगे? अरे, वह तुम्हें खा जाएगा।" चीते ने मैकू को समझाने के लहजे में कहा, "मैकू भाई, हम तुम्हारी योजना का स्वागत करते हैं। लेकिन, तुम अपनी जान क्यों गँवाना चाहते हो? तुम तो जानते ही हो कि शेर कितना जालिम और ताकतवर है।" अन्य कई जानवरों ने भी मैकू को समझाया, लेकिन वह था कि अपनी ज़िद पर अड़ा ही रहा और कहता रहा, "चाहे मेरी जान ही क्यों न चली जाए, लेकिन शेर से युद्ध करके ही रहूँगा। और आप सब जानते ही हैं कि मैं यह युद्ध अपने जानवर भाइयों के लिए ही तो लड़ने जा रहा हूँ। ऐसे में यदि मुझे अपना जीवन बलिदान भी करना पड़े, तो यह मेरे लिए

गर्व की बात होगी। इसलिए मेरा आप सबसे यह अनुरोध है कि आप लोग मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लें और मुझे शेर से लड़ने की स्वीकृति दे दें।

मैकू की इस प्रकार की ज़िद देखकर सब जानवर गंभीरता से उसके प्रस्ताव पर विचार करने लगे, लेकिन वे लोग मैकू को मौत के मुँह में जाने देने के लिए सहमत नहीं हो पा रहे थे। कुछ ने तो यहाँ तक कहा कि शायद मैकू पागल हो गया है, तभी ऐसी बातें कर रहा है। जब मैकू किसी प्रकार भी मानने से नहीं माना, तो सबने उसे शेर से लड़ने की स्वीकृति दे दी। मैकू इससे प्रसन्न हो उठा। मैकू गधे के प्रस्ताव को जानकर शेर को बड़ा गुस्सा आया। उसका मन तो किया कि वह उसी समय जाकर गधे को तुरंत कच्चा चबा जाए, लेकिन वह मजबूर था। दरसल, जंगल के जानवरों की सभा के निर्णय के विरुद्ध कुछ करने की बात उसे उचित नहीं लगी। इसलिए, वह गुस्से में गधे से युद्ध करने को तैयार हो गया। उसने सोचा चलो ऐसे नहीं, वैसे ही सही पर मैं गधे को मार डालूँगा।

यह तय हुआ कि एक हफ्ते बाद शेर और गधा, दोनों जंगल के उत्तर वाले मैदान में युद्ध के लिए मिलेंगे। यह भी निर्णय लिया गया कि दोनों एक–दूसरे के ऊपर तीन–तीन बार वार करेंगे। एक के वारों को दूसरा सिर्फ सहेगा। उस समय वह प्रति हमला नहीं कर सकता। हाँ, इन वारों के दौरान दोनों में जो भाग जाए या मर जाए, वह हारा हुआ माना जाएगा।

असल में मैकू बहुत ही चतुर गधा था। वस्तुतः शेर से लड़ने की एक युक्ति उसके दिमाग में आ गई थी। इस फैसले के बाद वह अपनी युक्ति पर काम करने लगा। जंगल के एक तालाब में पानी कम और कीचड़ ज्यादा था। मैकू रोज उस तालाब में जाकर खूब लेटता था। इससे उसके शरीर पर कीचड़ लग जाता। कुछ देर कीचड़ में लेटने के बाद वह उस तालाब के किनारे धूप में बैठकर अपने बदन पर लगे कीचड़ को सुखाता। कीचड़ की एक पर्त के सूख जाने पर वह दोबारा यही करता। इस प्रकार उसके शरीर पर कीचड़ की पर्तें जमती गईं। शेर इस सबसे बेखबर था।

निश्चित दिन जंगल में मेले जैसा नज़ारा था। जंगल के उत्तर वाले मैदान में सभी जानवर इकट्ठे होने लगे। बंदर, गिलहरी और चिड़िया आदि यह युद्ध देखने के लिए आसपास के पेड़ों पर आ जमीं। इस युद्ध प्रतियोगिता की व्यवस्था का काम चीते को सौंपा गया था। उसने मैदान में चारों ओर निशान लगा दिए और सबको हिदायत दी कि सभी इन निशानों से पीछे ही रहें, इनसे आगे आने की कोशिश न करें।

निर्धारित समय से पूर्व ही उन निशानों के चारों ओर जानवरों का जमघट लग

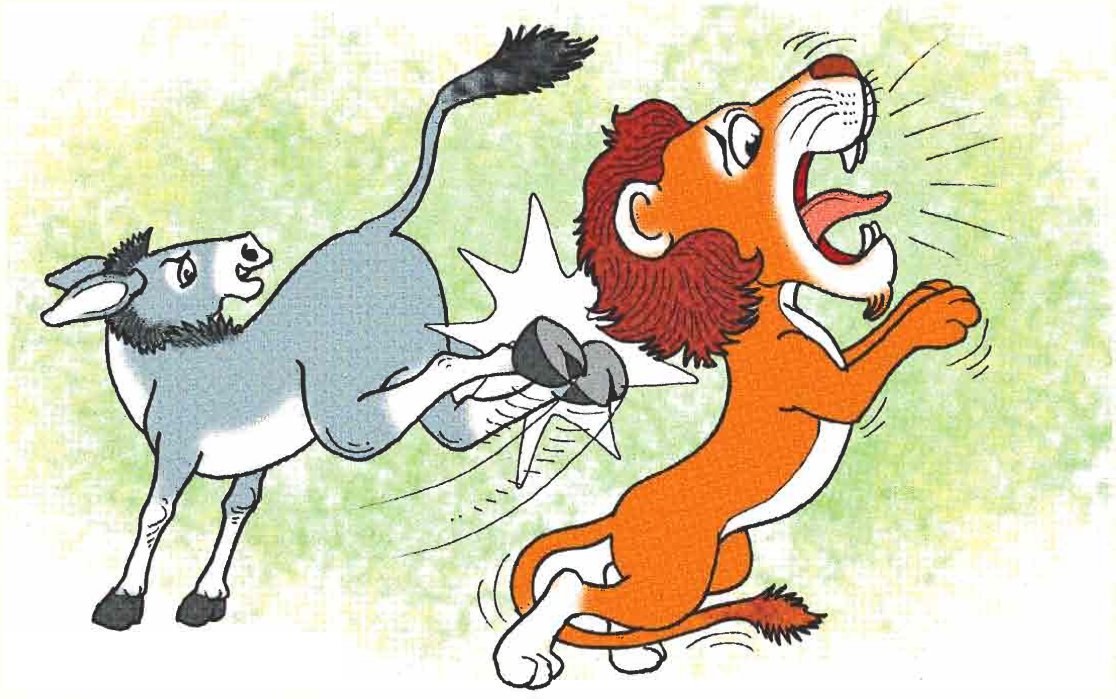

चुका था। वहाँ उपस्थित सब जानवर शेर और गधे के आने की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे। वे दोनों अभी आए नहीं थे। जानवरों में खुसर–फुसर हो रही थी। कुछ देर बाद शेर और गधा विपरीत दिशाओं से लगभग एक साथ आते दिखाई दिए। दर्शकों में खलबली मच गई। चारों ओर फुसफुसाहट होने लगी।

हाथी को इस युद्ध का निर्णायक बनाया गया था। शेर और गधे के आने के बाद उसने सावधान होने की घंटी बजाई। इससे सर्वत्र शांति छा गई। फिर टॉस किया गया। टॉस शेर ने जीता, अतः पहले उसे ही गधे पर वार करने थे। दोनों प्रतिद्वंदी एक–दूसरे के सामने लगभग सौ मीटर की दूरी पर खड़े हो गए। वातावरण एकदम तनावपूर्ण, लेकिन शांत था। इस जंगल के लगभग सारे जानवर इस मुकाबले को देखने के लिए वहाँ उपस्थित थे। वे सब सजग हो गए।

हाथी ने घंटी बजाई। शेर खूब तेज दौड़ कर गधे के पास आया और अपने दोनों अगले पंजों से उस पर पूरा वार किया। गधा इस वार से तनिक भी विचलित न हुआ। वह आराम से खड़ा रहा। शेर के पंजों में गधे के शरीर पर जमी सिर्फ मिट्टी आई। दूसरी घंटी बजने पर शेर ने फिर दौड़ कर गधे पर वार किया। लेकिन, इस बार भी उसका वार खाली गया। गधे का बाल भी बाँका न हुआ। शेर के पंजों में मिट्टी ही आई। वह गधे

को घायल तक न कर सका। उसे बहुत गुस्सा आया और वह झुंझला गया। वार करने के लिए तीसरा नंबर आने पर वह दोगुने जोश से दौड़कर आया और झपट कर गधे पर कूदा। शेर के इस खतरनाक वार का भी गधे पर कोई असर न हुआ। वह वार खाकर भी मुस्कुराता खड़ा रहा, जैसे शेर को चिढ़ा रहा हो। शेर के लिए यह सब बड़े शर्म की बात थी। ऐसा कभी उसके साथ नहीं हुआ था।

इस प्रकार शेर के तीनों वार खाली गए। गधा सही सलामत रहा। उसके समर्थकों ने हल्ला मचा–मचा कर उसका स्वागत किया।

अब वार करने के बारी गधे की थी। वह पहले पास में पानी के तालाब पर गया और उसमें घुसकर अपने बदन की सारी मिट्टी धो डाली। शेर वार सहने के लिए तैयार था। गधा वापस आ चुका था। निर्णायक हाथी ने पहली घंटी बजाई। गधा दौड़ा–दौड़ा शेर के पास गया और तेजी से घूमकर उसने शेर पर दुलत्तियाँ बरसानी शुरू कर दीं। गधे के इस भीषण प्रहार से शेर की हालत खराब हो गई। उसे दिन में ही तारे नज़र आने लगे, लेकिन लज्जावश वह वहीं खड़ा रहा।

हाथी द्वारा दूसरी घंटी बजाने पर गधा दूसरी बार दौड़ कर गया और घूम कर फिर शेर पर बेतहाशा दुलत्तियों की बौछार कर दी। उसकी दुलत्तियों की वार बहुत तेज़ थी। इस मार की मार से शेर लगभग अधमरा–सा हो गया। उसकी यह स्थिति हो गई कि वह खड़ा भी बहुत मुश्किल से हो पा रहा था।

अभी गधे का एक वार और बाकी था। "निर्णायक हाथी ने तीसरी घंटी बजाई। गधा तीसरी बार दौड़ कर आया और पहले की ही भाँति पीछे घूमकर उसने दुलत्तियाँ झाड़नी शुरू कर दी। लेकिन, यह क्या? शेर तो वहाँ था ही नहीं। वह तो नदारत हो चुका था। गधे की दुलत्तियों की मार से उसकी हालत ऐसी पस्त हुई कि वह मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ। युद्ध के नियम के अनुसार निर्णायक हाथी ने गधे को इस युद्ध का विजेता घोषित कर दिया।

गधे को विजय देखकर उसके समर्थकों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन लोगों ने गधे को कंधों पर उठा लिया और उसकी जय–जयकार करते हुए सारे जंगल में उसका जुलूस निकाला। जंगल के सारे जानवरों ने गधे की इस विजय पर उसे बधाई दी और शेर का घमंड चूर करने के लिए उसे धन्यवाद दिया। दरअसल बेवकूफ माने जाने वाले मैकू गधे ने अपनी बात सिद्ध कर दिखाई थी।

इस घटना के बाद शेर ने कभी भी छोटे जानवरों को तंग नहीं किया। इससे उस जंगल के सारे जानवर सुख–चैन से अपना जीवन बिताने लगे।

सी–9/62, विशेषखंड
गोमतीनगर, लखनऊ–226010 (उ.प्र.)

My Page

Andy Ka Ek Din

Chaitanya Raghav

There was a boy named Andy. He was very naughty. One day he went for a picnic with his parents. Suddenly that area got affected by a sand storm. He could not see anything. He lost his way and drifted away from his parents. When the sand storm got over, his parents went about searching Andy but he could not be found. Andy was worried. He searched for his parents in all directions but could not locate them. He realized that he had lost his way due to the sand storm.

Andy had a camera and he checked if it was functional. He looked at the sky and decided to walk in a particular direction. After a while he could see few people under a tree. They had their faces covered and he could make out that they were thieves. He had read about thieves who covered their faces. He hid himself behind another tree and tried to overhear their conversation. Andy took out his camera and shot a video of the thieves. He also overheard one of the members in the gang saying that as per plan a bomb has been planted at the desired location and that by blowing it they can loot the place.

Andy realized their motive but could not recognize the place they were referring to. The gang of thieves then moved into a nearby hut and this gave Andy an opportunity to run away from there. He had only one thing on mind and wanted to fulfil it. While he was running

away from them, Andy kept looking for some sign boards.

Soon he could locate one which pointed that there was a police station not far away from that place. Though he was gasping for breath, he did not stop running. He knew he had very little time. He ran for nearly four kilometers. He remembered the cross country race at his school in which he came first. He soon reached the Police station and gasping for breath informed everything about the incident to the Officers on duty and also showed them the video he had shot.

The Police officers gave him water to drink and immediately reached the spot with Andy where the thieves were hiding. They arrested the thieves and sent them to jail. They appreciated the courage and presence of mind of Andy and informed him that the thieves were planning to loot a bank. The bomb was also deactivated. They thanked Andy and reunited him with his parents.

Andy's parents were very proud of the courage displayed by Andy. The next day Andy was the talk of the town. The newspapers carried the news about Andy's bravery and the prize money of ₹ 500 that he received for the valiant act. Andy became very popular in the town.

sriram@mayocollege.com

Golden Earth

Dr. Shashi Goyal

Moon when I see you in the sky
I wish I have the wings so can fly
I wish I can see beauty of your land
Where all over there silvery sand.
Golden tree mountain have white cream
I will sleep and see a sweet dream
You came wearing white cotton gown
Took me with you and saw your town
Your earth is more beautiful than moon
So green and watery with many boon
So many colours are there on earth
There are sea, ice, river, tree all are worth.
See the beauty of your motherland
With your relations and helping hand.

3/28 A/2 Jawahar Nagar Road
Khandari Crossing, Agra-282002

डर के आगे जीत

पवन कुमार वर्मा

स्कूल बस वाले ने आज भी प्रणय को गली के मोड़ पर ही छोड़ दिया। पापा ने उसे कितनी बार समझाया था कि वह उसे घर तक पहुँचा दिया करे। लेकिन उस पर कोई असर नहीं होता था।

आज स्कूल के वार्षिक–उत्सव में कई कार्यक्रम थे! इस कारण देर हो गई थी। शाम ढल गई थी। अँधेरा होने लगा था। गली के मोड़ से प्रणय का घर कुछ दूरी पर था। शाम होते ही उसके घर के आसपास सन्नाटा छा जाता था। इस कारण प्रणय के कदम तेज़ी से चल रहे थे।

मम्मी भी परेशान हो रही होंगी। वह घर में अकेली ही होंगी। पापा को घर

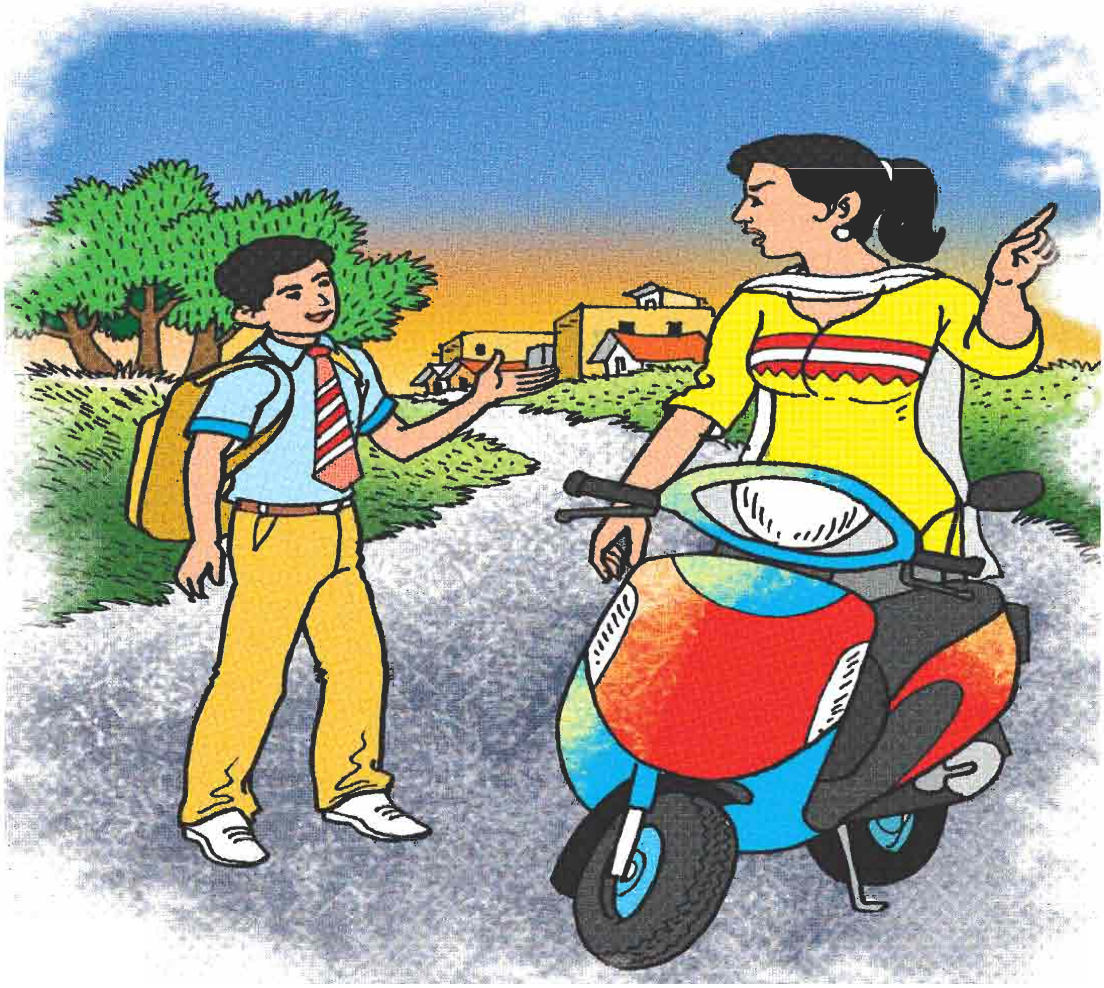

लौटने में आजकल देर हो जाती थी।

गली के पहले मोड़ के बाद ही चारों ओर का रास्ता सुनसान दिखाई देने लगा। प्रणय थोड़ा घबरा भी रहा था। कच्ची सड़क और उसके दोनों ओर पेड़–पौधे। प्रणय तेज़ी से चला जा रहा था।

अचानक कुछ दूरी पर उसे कोई खड़ा दिखाई पड़ा। लेकिन घर तक जाने का कोई और रास्ता भी नहीं था। इसलिए हिम्मत बाँध कर प्रणय आगे बढ़ने लगा।

अब उसे सब कुछ साफ–साफ दिखाई देने लगा। वह कोई दीदी थीं। पास में ही उनकी स्कूटी खड़ी थी। धीरे–धीरे प्रणय उसके पास तक पहुँच गया। दीदी कुछ घबराई हुई थीं। थोड़ी देर के लिए प्रणय वहाँ रुका। वह अपनी स्कूटी ठीक करने का प्रयास कर रही थी। फिर वह आगे की ओर बढ़ गया।

अभी वह कुछ ही दूर गया था कि उसे विचार आया पापा उससे बराबर कहते थे कि मुसीबत में पड़े लोगों की मदद करनी चाहिए। वह इस समय घर जाने की बात भूल गया और वापस स्कूटी के पास आया।

"क्या बात है दीदी? क्या आपकी स्कूटी बंद हो गई है?" उसने उससे पूछा।

पहले तो वह घबराई फिर बोली, "हाँ! अचानक चलते–चलते बंद हो गई और अब चालू भी नहीं हो रही है। क्या यहाँ आस–पास कोई मैकेनिक है? मुझे घर भी जाना है। घर में सभी परेशान हो रहे होंगे। आज मैं जल्दी–जल्दी में अपना मोबाईल भी घर भूल आई हूँ।"

"कोई बात नहीं दीदी। मैं यहीं पास में रहता हूँ। आप मेरे साथ मेरे घर चलिए। वैसे भी मैं किसी मैकेनिक को नहीं जानता।" प्रणय ने कहा।

"नहीं! मैं कहीं नहीं जाऊँगी! फिर मैं तो तुम्हें जानती भी नहीं।" इस बार दीदी थोड़े गुस्से में बोली।

"देखिए! यहाँ कितना अंधेरा हो गया है। आखिर आप यहाँ कब तक खड़ी रहेंगी?" प्रणय ने उससे थोड़ी ज़िद की। फिर उसे भी तो डर लग रहा था।

"तुम जाते हो या नहीं!" दीदी चीख कर बोली।

पहले तो प्रणय थोड़ा घबराया। फिर उसने सोचा कि दीदी को घर लेकर जाना जरूरी है। वहाँ मम्मी अपने मोबाईल से उसके घर वालों को सूचना भी दे सकती है। इस सुनसान सी जगह पर वह उसे अकेला छोड़ना नहीं चाहता था। पापा ने उसे कई बार बताया था कि मुसीबत में पड़े लोगों की जरूर मदद करनी चाहिए।

"ठीक है दीदी। अगर आप मेरे साथ नहीं चलना चाहतीं तो कोई बात नहीं। लेकिन मैं आपको यहाँ अकेला कतई नहीं छोड़ूँगा। मैं भी यहीं बैठता हूँ।" इतना कहकर प्रणय वहीं पास में पड़े एक पत्थर पर बैठ गया। दीदी ने उसकी बात का कोई जबाब नहीं दिया। वह फिर से अपनी स्कूटी ठीक करने में लग गईं।

रात गहरा रही थी। प्रणय अब तक घर नहीं लौटा था। मम्मी भी परेशान हो रही होंगी। कुछ देर और इंतजार करने के बाद प्रणय ने दीदी को फिर से घर चलने को कहा। लेकिन वह बिल्कुल तैयार नहीं हुई।

प्रणय दीदी को यहाँ अकेला भी नहीं छोड़ना चाहता था। अब उसके सामने एक ही रास्ता था कि वह किसी तरह घर जाकर मम्मी को सारी बात बताए।

अंधेरा होने के कारण उसकी हालत भी खराब थी। अकेले घर जाने में उसे भी डर लग रहा था। कुछ देर वह इसी उधेड़–बून में लगा रहा। फिर उसने तय किया कि वह अंधेरे से बिलकुल नहीं घबराएगा, और अकेला ही घर जाकर मम्मी को सारी बात बताएगा। उसने कई बार सुन रखा था कि डर के आगे ही तो जीत है। उसने अपने डर को दूर भगाया और घर की ओर चल पड़ा।

"तुम इतनी देर कहाँ थे?" मम्मी परेशान घर के बाहर खड़ी थीं।

"देखो न मम्मी! एक दीदी की स्कूटी खराब हो गई है। वे वहाँ अँधेरे में खड़ी हैं। मैंने उनसे कहा कि पास में मेरा घर है। आप मेरे घर चलिए। यहाँ कब तक खड़ी रहेंगी? लेकिन वह चलने को तैयार नहीं हुई। मैं उनको अकेले छोड़कर कैसे चला आता? तो मैं भी कुछ देर उनके पास बैठ गया।" प्रणय ने एक साँस में ही सब कुछ बता दिया।

"मैं भी नहीं जानता। बस दीदी को परेशान देखकर मैं उनकी मदद करना चाहता हूँ। आप मेरे साथ चलिए।" मम्मी का हाथ पकड़ कर वह चलने को कहने लगा। "ठीक है चलो। मुसीबत में लोगों की मदद करनी ही चाहिए।" मम्मी उसके साथ चलने लगीं।

कुछ ही देर में दोनों दीदी के पास पहुँच गए। वह अब भी अपनी स्कूटी चालू करने का प्रयास कर रही थी।

"क्या हुआ बेटा?" मम्मी ने दीदी से पूछा।

"देखिए न आंटी! अचानक मेरी स्कूटी बंद हो गई। जल्दी में मैं अपना मोबाईल भी घर भूल आई। घर में सब लोग परेशान होंगे।" इतना कहकर वह रोने लगी।

"तुम बिल्कुल मत घबराओ। हम हैं न। चलो अपने घर का नंबर बताओ। मैं उनसे बात करती हूँ।" मम्मी ने उसे सीने से लगा लिया था।

फिर मम्मी ने दीदी के घर वालों से बात करके उन्हें सारी बात बताई। दीदी की भी उनसे बात कराई। उनके घर वाले भी बहुत परेशान थे। लेकिन अब सब कुछ ठीक हो गया था। मम्मी दीदी को वहाँ से साथ घर ले आईं।

थोड़ी देर में दीदी के पापा उन्हें लेने आ गए। उन्होंने मम्मी को मदद करने के लिए धन्यवाद दिया। प्रणय एक ओर खड़ा यह सब देख रहा था।

दीदी उसके पास आई और बोली, "मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी। तुम्हारे साथ तुम्हारे घर नहीं आई। लेकिन मैं वादा करती हूँ कि अब मैं बराबर तुमसे मिलने तुम्हारे घर आऊँगी।" उसकी बात सुनकर प्रणय बहुत खुश हुआ। क्यों न हो? उसे आज एक प्यारी सी दीदी जो मिल गई थी।

आमघाट कॉलोनी, (पानी टंकी के पूर्व)
आमघाट सुभाष नगर, जिला गाजीपुर
(उ.प्र.) 233001

This Beautiful Place

Yash Tandon

In front of me this beautiful place
has arrived
Where many tall hills are disguised.

It has a beautiful lake
Where are trees I can shake.

In the lake there are two geese
A temple is built there
Which was made with lots of care
The air is totally pure
And there is no war, we are sure.

This land for me is very prized
In front of me this beautiful place
has arrived.

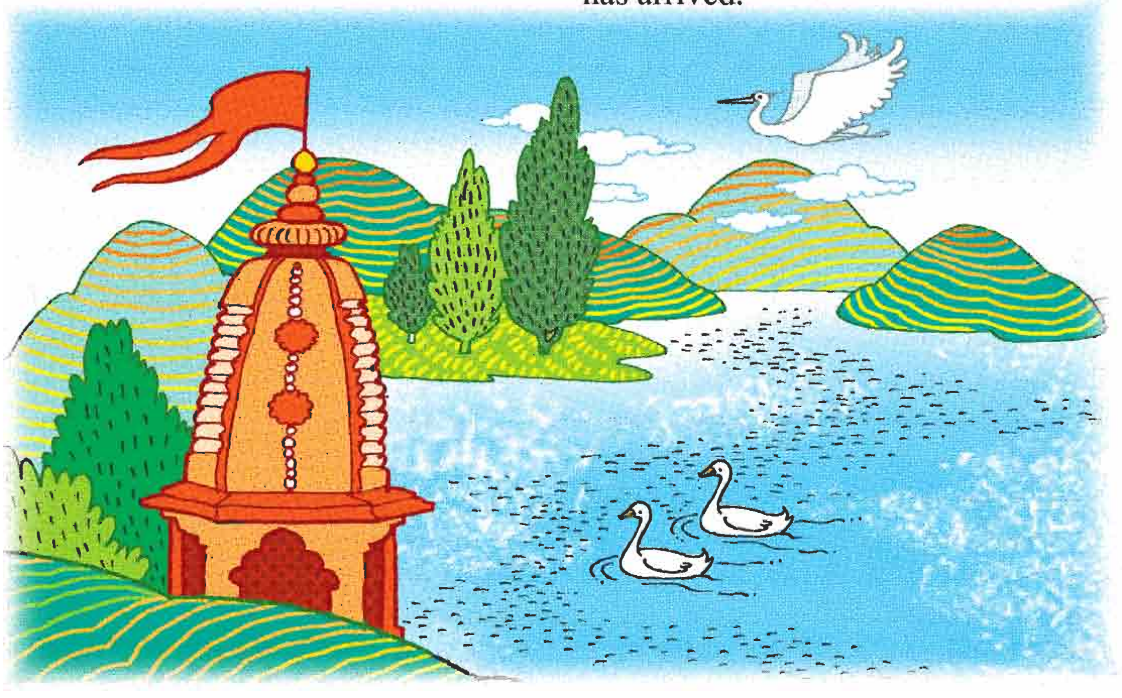

Baul Dance

Banani Sarkar

Folk dances differ from classical dances in many ways. The tempo, rhythm and gestures of classical dances are complex. However, folk dances are simple and spontaneous. Folk dances are performed individually or in groups. Group dances are common or collective thinking. Singing is an essential part of these dances.

In this write up I am going to tell you about the famous folk dance of Bengal, Baul. Baul dance forms part of the religious rites of Bauls. Baul songs are spiritual in theme and while dancing in ecstasy, they hold an Ektara in right hand. Some wear Ghubur (string of bells) on their hands. Usually Baul dances are performed individually but at times as duets or group dance. Though while dancing Bauls shake their heads and locks of hair or twirl around and move their arms and feet, there are no ritualised gestures. The Ektara plays a prominent part in the dance, sometimes placed close to the ears and sometimes up. This dance is mainly popular in Kushtia and Jessore districts in Bangladesh and Burdwan and Birbhum districts of West Bengal.

MSD World School, Kaushambi
Ghaziabad (UP)

एक से बढ़कर एक

विमला भंडारी

झील के किनारे खड़े हुए वे गिनती में छोटे–बड़े मिलाकर चार लड़के हैं– देवन, युगीन, गब्बू और चिनार उनके नाम हैं। डींगे मारने में तो मानो इन सब लड़कों को महारत हासिल है।

"क्या तुम लोग दस्ताने के बारे में जानते हो?" चिनार ने अपने तीनों साथियों से पूछा।

"वही ना! जो हाथ में पहने जाते हैं।" देवन कुछ बोलता इससे पहले युगीन बोला, "दस्ताने शब्द मोजे का विलोम है। मोजे

पाँव में पहने जाते हैं। दस्ताने हाथ में।" युगीन ने अपना ज्ञान बताया।

"मैं जिन दस्तानों की बात बताने जा रहा हूँ दोस्तो, वह कोई साधारण दस्ताने नहीं है। इन्हें रबर या ऊन के बने हुए दस्ताने भी मत समझना।" चिनार ने रहस्यमयी आवाज़ में बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

"तो क्या जादुई दस्ताने है भैया?" अब तक चुप बैठा गब्बू बीच में कूद पड़ा।

"समझ गया सब, बिना बताए ही सब समझ गया।" युगीन ने फिर से ज्ञान बाँटना चाहा। चिनार जरूर मशरूम के स्पंजी दस्ताने की बात कर रहा है। मशरूम का यह दस्ताना गिरधारी के खाली पड़े प्लॉट में उग रहा है। जहाँ उसके दद्दू ने बगीचा बना रखा है। इसके बाग में खूब सारे पेड़–पौधे लगे हुए हैं। जिसमें बहुत सारे फल–फूल लगते हैं। खूब सारे पशु–पक्षी यहाँ रहते हैं..."

"यह बाग पहले इस तरह नहीं था।" चिनार बीच में ही बोल पड़ा।

"मेरे दादा ने एक बार मुझे बताया था कि यहाँ एक जादूगर रहता था। उसके पास बहुत बड़ी झोली थी जिसमें उसने मशरूम भर रखे थे। यह मशरूम कोई साधारण मशरूम नहीं थे। हर मशरूम किसी–न–किसी जादू के काम आता था..." चिनार की बात बीच में ही अधूरी रह गई वह बात पूरी करता इससे पहले ही युगीन बोल पड़ा, "मुझे मालूम है एक दिन विदेशी शिकारी के हाथों वह जादूगर मारा गया। विदेशी शिकारी जादूगर की सारी चीजें लूटकर ले गया।" इतना कहकर युगीन रुक गया।

"फिर आगे क्या हुआ भैया?" गब्बू ने उत्सुकता से पूछा।

"मैं बताता हूँ...

"पर मेरी एक शर्त है जब मैं बात कर रहा हूँगा तब बीच में कोई नहीं बोलेगा।" चिनार ने कहा।

एक बार सब मौन हो गए। सब आगे की बात सुनना चाहते थे। चिनार ने कहना शुरू किया–

"हाँ तो मैं बता रहा था एक दिन विदेशी शिकारी के हाथों जादूगर मारा गया। विदेशी शिकारी जादूगर की सारी चीजें लूटकर ले गया। जादू में काम आने वाले मशरूम की झोली भी ले गया। परंतु उसमें एक मशरूम यही धरती पर उछल कर गिर गया। तेज धूप में सूख कर मशरूम बिखर गया। कुछ समय बाद बारिश हुई। बारिश की नमी जमीन में फैली तो मशरूम के बीज उग आए। बस यही..."चिनार की बात काटकर देवन ने बीच में ही बात को लपक लिया और कहने लगा।"

"बस यहीं से, तो दोस्तों। बस यहीं से जादुई दस्ताने की कहानी शुरू होती है। आज सुबह जब मैं दादी माँ के लिए सूप बनाने के वास्ते उस बगीचे से सब्जी लेकर आया था तो छोटे दस्ताने के आकार के दो

मशरूम सब्जी का थैला खाली करते समय टोकरी में टपक पड़े। मुझे आश्चर्य हुआ। मैं उन दोनों छोटे दस्तानों को देखने लगा। बिल्कुल नरम और स्पंजी। मैंने सोचा मशरूम के इस दस्ताने में मुझे अपनी अंगुलियाँ डालनी चाहिए। पहले एक अंगुली, फिर दो अंगुली और धीरे–धीरे मैंने एक हाथ की अपनी सारी उँगलियाँ डाल दी। दस्ताना रबर की भाँति फैलने लगा। मैंने अपना अंगूठा भी उसमें डाल दिया। उसके बाद मैंने सब्जी की टोकरी में से दूसरा मशरूम वाला दस्ताना उठाया। उसे भी उलट–पुलट कर देखा तो मुझे लगा कि यह दस्ताना तो उसे पहले दस्ताने की दूसरी जोड़ी है। इसे भी पहन लेता हूँ और मैंने वह दूसरा दस्ताना भी पहन लिया।" तभी मुझे दादी के कहराने की आवाज़ सुनाई दी।

"हे भगवान! यह मैं क्या खेलने लग गया। मुझे याद आया कि दादी के लिए सब्जियों का सूप बनाना था। चार दिन से दादी को बुखार है। अचानक से मुझे लगा कि जैसे मैं हल्का हो रहा हूँ। मेरे शरीर में एक अलग–सी स्फूर्ति आ गई है। जैसे मैं अभी ऊपर हवा में उड़ने लगूँगा।"

"फिर क्या हुआ भैया? क्या तुम हवा में उड़ने लगे?"

"बताना जल्दी....जल्दी बताना जरा।"

"अरे सुनो तो, जरा आगे की बात कह तो लेने दो। दादी ने मुझे पुकारा, "देबू बेटा, कहाँ हो? मेरे पैरों में बहुत दर्द हो रहा है।" "दादी अभी आया।" कहकर जैसे ही मैं चलने को हुआ और अपना पाँव ऊपर उठाया तो वह जमीन के ऊपर उठ गया। यह क्या? मैं हवा में ऊपर उठकर तैरता हुआ दादी के पास पहुँच गया। मुझे आश्चर्य हुआ। बस यहीं से शुरू हो जाती है इन जादुई दस्तानों की कहानी।" देवन इतना कहकर चुप हो गया।

"हाँ...हाँ... मुझे भी मालूम है। फिर तुमने जैसे ही दस्ताने वाले हाथ को आगे बढ़ाकर सूप माँगा तो तुम्हारे हाथ में गरमा–गरम सूप आ गया।" युगीन कहाँ चुप रहने वाला था वह तो सब बातों का ज्ञाता था।

"क्या वह जादुई दस्ताना अभी भी तुम अपने साथ लाए हो? क्या तुम हमें पिज्जा खिला सकते हो? दस्ताना पहनकर क्या तुम आईसक्रीम मँगवा सकते हो...?"

तभी एक हाथ धप्प करते हुए सब की पीठ पर पड़ा। सब एकदम से चौंक कर देखने लगे। यह हाथ स्कूल वैन के ड्राइवर का था और वह कहने लगा, "बहुत हो गई गप्प बाजी। हर समय टी.वी. देखते हो और काल्पनिक दुनिया में गोते लगाते रहते हो। अब गाड़ी में बैठो और स्कूल के लिए चलो। नहीं तो बहुत पिटाई होगी।"

घड़ी देखते ही चारों के चारों स्कूल के लिए भागे और वैन में चढ़ गए।

भंडारी संदन, पैलेस रोड
सलूंबर (राजस्थान)

Play

Story of Sajjangarh : The Monsoon Palace

Pulkit Upadhyay

Sugandha Ma'am: Good morning students! Have you ever visited a fort or palace? How does it look like? Why are they constructed?

Jay: I went to my hometown Jaipur last week. There I went to Amer fort with my family.

Ritika: Forts and palaces are colossal buildings constructed on hilltop.

Rohini: They used to be constructed as safe houses for royal clan and keep an eye on the enemies' moves.

Sugandha Ma'am: You all are correct. But can you imagine a palace constructed on a hilltop for keeping an eye on clouds and motion of winds?

Students: Really! (They were amazed in unison.)

Sugandha Ma'am: Yes, there is a palace constructed on Bandsara peak of the Aravalli hill range at an elevation of 3100 ft. This palace is called Sajjangarh Palace or Monsoon Palace. It is on the outskirts of Udaipur. It overlooks the entire city, lake system and surrounding countryside. It was made to keep an eye on clouds hovering over Udaipur,

Vikram: When was it built? Whose brain was behind this palace?

Sugandha Ma'am: It was vision of Maharana Sajjan Singh. However, due to his sudden death its construction was got completed by Maharana Fateh Singh of Mewar dynasty. It was built in last two decades of nineteenth century.

Shikha: It seems to be an architectural beauty.

Sugandha Ma'am: Indeed, it is marvellous. It was constructed in Rajputana architectural style with white marbles.

Akanksha: What is the importance of this palace in today's time?

Sugandha Ma'am: It holds great importance. This fort is encircled by Sajjangarh Wildlife Sanctuary. Apart from wildlife, various cultural programs, dramas, light shows and performances also take place here. It is the centre of attraction for tourists visiting Udaipur from across the globe.

The 1983 James Bond film Octopussy was also shot at monsoon palace.

Diya: It must have taken years of hardship and investment. Was it built to keep an eye on clouds only?

Sugandha Ma'am: It is said that

Maharana built it at the pinnacle to get a view of his ancestral home, Chittaurgarh. It also served as dumping ground for artilleries whenever enemy tried to invade. Nonetheless, keeping an eye on monsoon was the chief objective behind building this Monsoon Palace.

Shreyansh: Ma'am, have you ever visited the Monsoon Palace?

Sugandha Ma'am: Yes, I have visited there during summer vacations. It is open for tourists. You all should pay a visit. It will be a great excursion as well as educational tour for you.

Email: pulkitupadhyay21@gmail.com

Our Environment

R.N. Kabra

Environment is the dress of earth
Trees, wind, birds, animals, all have their worth
Don't waste this God's boon
Sun and stars and cool-cool moon.

Trees are our useful friends
Cut them not but save these friends
Make this earth, lusty green
Grow more trees and keep it clean.

Air, water and sky clean
No noise only peace is seen
Forests, animals, trees and mines grand
Let them all be your lovely friend.

A-438, Kishore Kutir, Vaishalinagar
Jaipur-302021 (Rajasthan)

समझदार लड्डू

चेतना उपाध्याय

"वाह. ... लड्डू जीत गया।" "नहीं नहीं मैं नहीं अतुल भैया जीते हैं।" अतुल भी ज़ोर–ज़ोर से उछलने लगा। खुशी के मारे अक्सर ही वह फुटबाल के जैसे उछलने लगता है फिर उसे खिलखिलाते देख लड्डू भी दोनों हाथों से ताली पीटते–पीटते उछलने लगा। उन दोनों को उछलते देख फिरकी भी उछलने लगी, पर अभी भी वो लगातार ताली पीटते हुए बोले जा रही थी, "लड्डू जीत गया, लड्डू जीत गया।" अतुल अपनी धुन में, "मैं जीत गया, मैं जीत गया।" चिल्लाते–चिल्लाते उछल रहा था।

"हट झूठे तू थोड़े ही जीता है..." अपनी बाल सुलभ मुस्कान के साथ फिरकी बोली। लड्डू ने झट से उसके मुँह को अपनी हथेलियों से ढककर उसे चुप कराते हुए कहा, "तू चूप कर ज्यादा बक–बक मत कर। अतुल भैय्या हमेशा जीतते हैं, है ना भैय्या?" रौब से सीना फुलाते हुए अतुल बोला, "हाँ...हाँ।"

जिससे फिरकी चिढ़ गई, "ऊँह..." कर उसने मुँह फेर लिया। शोर सुनकर दादी माँ भी बाहर आ गई, उन्होंने भी अतुल को अपने अंक में जकड़ कर कहा, "अरे वाह! मेरा लाडेसर जीत गया।" फिरकी पुनः शिकायती अंदाज में बोली, "दादी माँ लड्डू जीता है।"

"चल हट! दादी माँ ने बड़ी आई वकीलनी।" कह कर उसे दूर धकेल दिया। और आदेशात्मक स्वर में बोली, "ज्यादा वकालत झाड़ने की कोशिश मत कर। यहाँ से नौ–दो ग्यारह हो जा। ज्यादा पंचायत करेगी तो घर में घुसने नहीं दूँगी...।" फिरकी बेचारी कसमसा कर रह गई।

अतुल भैय्या दादी माँ के साथ अंदर चले गए। फिरकी और लड्डू भी बरामदे से बाहर के दरवाजे की ओर चल दिए।

लड्डू अपनी मस्ती में चला जा रहा था। मानो कुछ हुआ ही नहीं और फिरकी को अतुल, लड्डू और दादी माँ पर गुस्सा आ रहा था। उसे दादी माँ पर सबसे ज्यादा गुस्सा था। फिर लड्डू पर, उसके बाद अतुल पर मगर बेचारी मुँह फुलाए चलने के आलावा कुछ और न कर पाई।

"आह! कितनी सुंदर तितली!" लड्डू गुलाब के फूल पर बैठी तितली की ओर देखते हुए बोला।

"मुझे नहीं देखना..." फिरकी मुँह फुलाए बोली। जबकि वह सारा दिन तितलियों के पीछे दौड़ती रहती है।

"अरे पागल, देख तो कितने पास बैठी है तेरे।"

मुझे नहीं देखना, और पागल किसे बोला? पागल तो तू है जीत के भी हार मान लेता है और हँसता रहता है। और वो दादी माँ... ऐसी होती है? फिरकी को गुलाब पर बैठी तितली के बजाय थोड़ी देर पहले हुई घटना दिखाई दे रही थी। लड्डू पर तो उसका कोई असर नहीं हुआ था।

"मैं और पागल? जा, जा अब मैं आठ साल का हो गया हूँ। और तेरे से ज्यादा समझदार भी, तेरे में तो कोई अक्ल ही नहीं है।" लड्डू गुलाब के गमले के पास वाली तिपाई पर बैठते हुए बोला।

"आ बैठ, तुझे भी समझाता हूँ मेरी मम्मी इस बंगले में झाड़ू–पोंछा, बर्तन कपड़े धोने का काम करती है। मैं तो वैसे ही मम्मी के साथ आ जाता हूँ। अतुल भैय्या के पास ढेर सारे सुंदर–सुंदर खिलौने हैं। उनके पापा आए दिन नए–नए ढेर सारे खिलौने लाते रहते हैं। अतुल भैय्या कितने अच्छे हैं। मुझे भी रोज दिखाते हैं। हम रोज साथ–साथ खेलते हैं। मुझे नए–नए खिलौनों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पास तो एक भी खिलौना नहीं है। इसलिए मैं यही खेलता हूँ। पर जब भी अतुल भैय्या खेल में हार जाते हैं तो उनको बहुत बुरा लगता है। तो उसी वक्त खेल छोड़कर सारे खिलौने समेट कर अंदर अपने कमरे में चले जाते हैं।

तब मैं अकेला बरामदे में बैठा रह जाता हूँ। मम्मी सारा काम खत्म करके आए, तब तक मुझे यहाँ अकेला बैठना पड़ता है।

इससे तो अच्छा है ना? भैया कभी भी हारे नहीं, और हमारा खेल चलता रहे। इसलिए मैं हार जाता हूँ। भैय्या खुश हो जाते हैं और खेल दुबारा शुरू हो जाता है और मुझे मम्मी के काम खत्म होने का इंतजार भी नहीं करना पड़ता। घर के काम खत्म होने के बाद भैय्या की मम्मी कभी–कभी कुछ खाने को भी दे देती है। दादी माँ भी पूजा के बाद प्रसाद का लड्डू भी मुझे ही खाने को देती है। बोलती है, "ले रे लड्डू, तू भी लड्डू ले ले रे। प्रसाद है दोनों हाथ एक साथ मिला के आगे कर। देख प्रसाद है नीचे एक भी दाना गिरना नहीं चाहिए।"

पता है, वो लड्डू का टुकड़ा प्रसाद बोल कर देती है। पर मुझे हँसते–हँसते लड्डू को लड्डू बोलती है तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। खाने में भी वह बहुत अच्छे स्वाद का होता है। यहाँ तो मेरे मजे ही मजे हैं। तू नहीं समझेगी। पर मैं तो बहुत समझदार हूँ।"

मं.न. 49, गोपाल पथ, कृष्ण विहार
कुन्दरन नगर, अजमेर (राजस्थान)

Dadi's Cellphone

Deepa Agarwal

Tum-de-dum! The message light was flashing on Dadi's cellphone, which lay on the coffee table in the lobby.

Ajeya peeped into her bedroom. She was busy with her morning puja.

Hurriedly he checked the message. Apoorva! Was the guy trying to catch him out? What luck he was around.

"R U ing d maths wrkshp?"

"Sr I thnkng abt it." He quickly tapped out.

"What're you up to?" Eleven-year-old Ajeya jumped.

"Nothing, nothing!"

His older brother Virat who was sixteen, frowned suspiciously. "Go give it to Dadi at once. She's supposed to keep it with her all the time."

Ajeya shrugged his bony shoulders. "You know Dadi. She forgets."

Virat's own mobile frilled and he strutted off grandly.

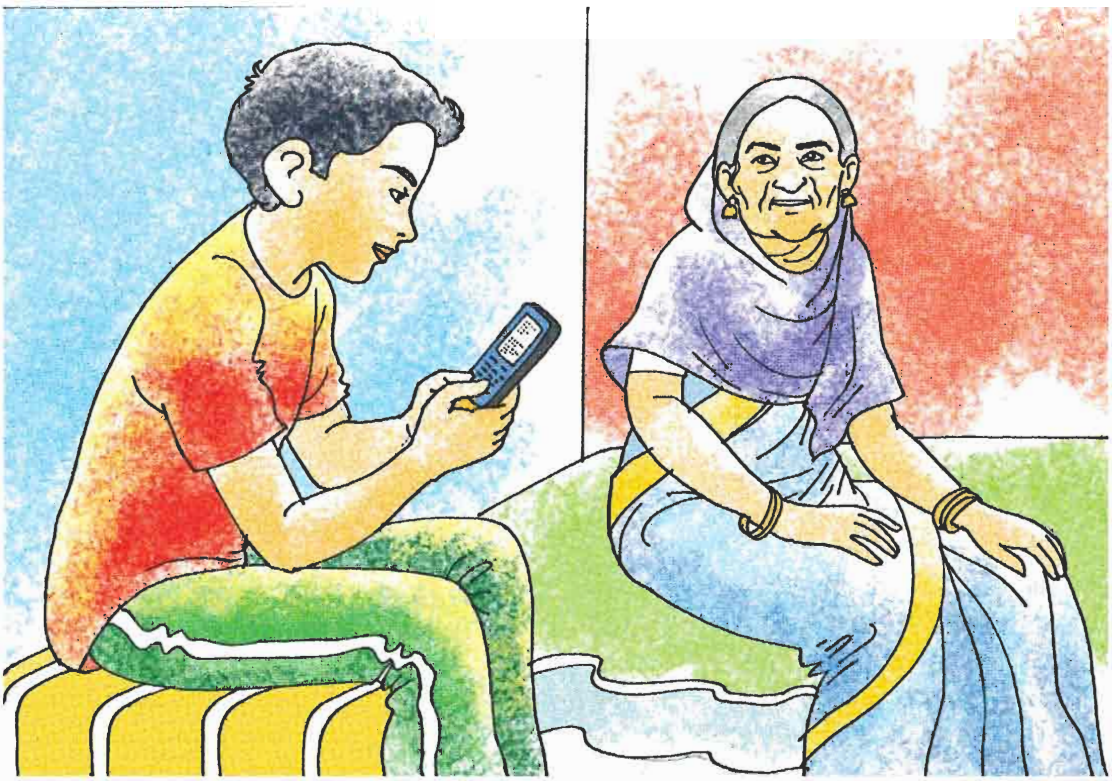

Ajeya stuck out his tongue at his muscular back, then darted into Dadi's room. "What do I need this thing for?" she grumbled.

"You know. So you can call Dad if you're not feeling well."

"Arre--the maid's here with me all the time—isn't she?" Dadi looked irritated. "It makes me jump and I keep losing it."

Dadi was a heart patient and Ajeya's parents had insisted she keep the phone so she could call in case there was an emergency. They were away in office all day, while the boys went to school. Today, however, being a Saturday, they were home.

Ajeya smiled. "Dadi...can I use it for a minute?"

"Of course. Nice toy, hunh?" Dadi beamed back.

Ajeya quickly dialed Apoorva's number. "Hi," he said. "Have to talk to my Mom about the workshop. I'm at the market right now. Call you later."

Hopefully that should convince Apoorva that he did own a cell phone, and the gang would stop teasing him.

He was the only one among his friends who didn't have one. When he'd asked Dad, he'd growled, "Are you crazy? What do you need one for?"

Ajeya could hardly say because all his friends had mobiles and he was the odd one out. Dad wouldn't understand.

Then he got a terrific idea. He gave them Dadi's number, saying he couldn't bring his mobile to school because his Dad didn't allow him to, since it was against the rules.

"What's the point of having one?" Sumit had scoffed.

"And no one really checks."

"Well he can't help it if his Dad's so strict," kindhearted Neha defended him.

But Apoorva had said, "He's just putting us on."

"Believe what you want." Ajeya had tried to sound cool.

"I'll believe you if you bring it to school on Monday."

Ajeya's heart thumped as he recalled the challenge. What should he do? Try to sneak Dadi's phone to school on Monday? What if someone saw him? What if he got caught in school? And worst, what if Dadi needed it? That would be too terrible for words. But Apoorva would never stop needling him...

Sunday night came and Ajeya still hadn't decided what to do. Then, as

he was passing through the lobby to his room, he saw Dadi's phone lying abandoned on the table. No one was around... It almost felt as if it had been left there for him. His breath came fast as he hurriedly slipped it into his pocket.

He didn't get a chance to show it to anyone till they reached class. The teacher hadn't come so he took it out and held it up for Apoorva, who sat further down the line, to see.

"Satisfied?" he asked.

"Is it a real one?" Apoorva scoffed. "Show it."

The phone was passed down. Apoorva had a good look, then Sumit began to try out the ring tones. But that very moment the teacher, Ms. Lal entered!

"Who's brought a mobile?" she rapped out. "Give it to me. Don't you know it's against the rules?"

Ajeya almost passed out. What was he to do now? He'd thought he'd just convince the others and then quietly take the phone back home. Even the sight of Apoorva's stricken face didn't help, or Sumit's shamefaced one.

"I'm so sorry, yaar," Sumit said in the break.

"It's all your fault," Neha told Apoorva. "You forced him to bring it."

For once Apoorva didn't have anything to say.

"It was my fault too," Sumit said. "What are you going to tell your Dad?"

"I-I'll tell him I lost it," Ajeya said miserably. If only the others knew what a mess they'd got him into! But he couldn't help cursing himself too for being so dumb and thoughtless.

"You'd better try to get it back," Neha said. "It's only fair."

Sumit nodded slowly. "But how?"

"I know Ms. Lal,"Apoorva cried. "She tries to act strict but she's quite soft hearted. If you go and beg her she might give it back. But we must do it before she hands it over to the Princie."

"Yes," Neha said. "Then there's no chance. But you need a really good story."

"I'll-I'll say I got it as a birthday gift from my grandmother who's very sick in hospital and...1 brought it because I wanted to keep calling to find out how she was," Sumit said.

"That could do the trick. Hurry," Neha cried. "There's just five minutes for the break to end!"

Ajeya almost collapsed with relief when Sumit came running back with the phone in his hand.

"Whew! She insisted I call my grandmother to prove I was telling the truth," he cried. "I was wondering what to do when the phone rang. I pretended it was my grandmother and said, `Dadi, how are you? I was just about to call.' Some old lady said, 'I'm okay, beta. Don't worry!' Wasn't that funny? What a lucky escape!"

"Dadi," Ajeya said hesitantly when he got home. "I did something really stupid, really terrible. "I-1 took your phone to school. I'm very sorry."

"I know," Dadi said.

"You know?"

"Oh-ho! Didn't you pick it and ask how I was when I called to check where it was? Don't worry. I was fine."

Ajeya's face went a deep beetroot red. It was Dadi who'd called! He'd been luckier than he deserved to be. But one thing he knew. He'd never do anything that uncaring again, even to impress his friends.

Email: deepa.agarwal@gmail.com

My Page

Trying and Crying

Arshita Parhi

The staircase to the heaven is open
Let me walk a little more
The force is pulling up
Let me take a splendid breath.
I have stopped caring
Much more ago
Please walk by
I can't talk.
I just want to be alone
With the stars and the moon
May be I will meet you when sun is up again.
I have cried a bit too much to be happy
I have tried too much to be satisfied.

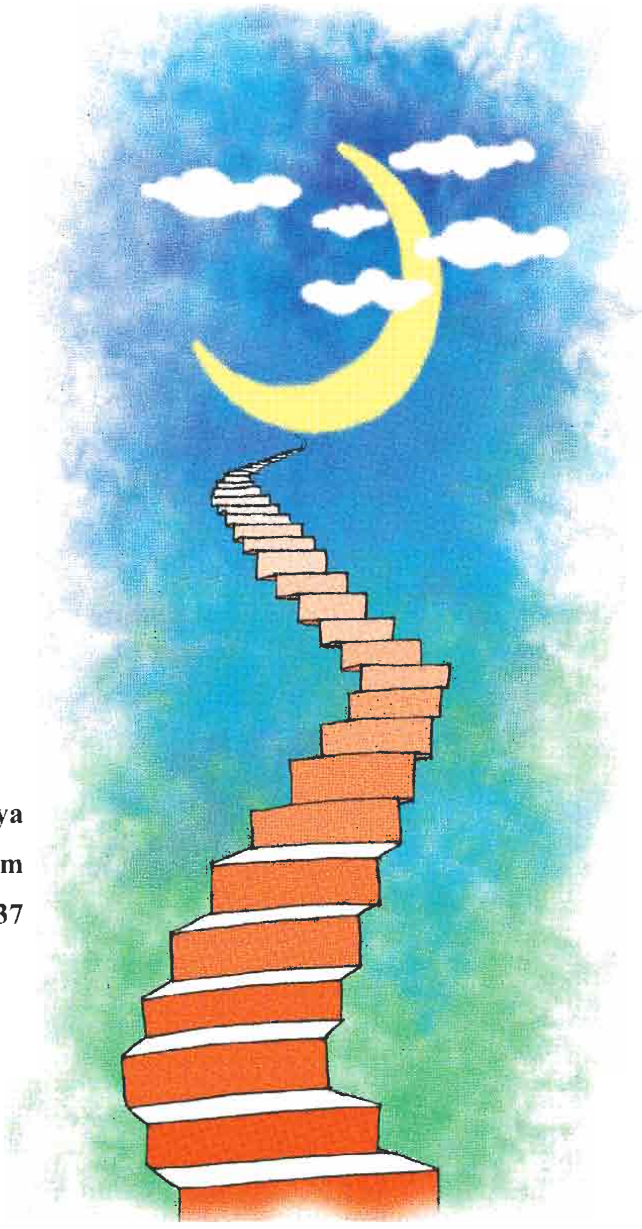

Jawahar Navoday Vidyalaya
Surangi, Ganjam
(Odisha)-761037

Judgement of Yama Dharma

Aramudan Iyengar

Once upon a time there lived a king in the down south named Vallabharaya. He was very generous and famous for helping poor and needy. He used to arrange meal for needy people on daily basis. One fine day similar preparations by the cook were going on which included all sorts of dishes. In between the preparations, an eagle was flying over and carrying a snake. Since the snake had been captured by the eagle, it tried to escape mid-air by spitting poison. But unfortunately the poison fell over the food. The same food was unknowingly served to the people. This in turn killed all of them who had consumed that food.

The king on listening about this disaster went into despair. He couldn't find the reason for the disaster. Few days passed. A group of people were visiting a place nearby. They halted at a place where an old lady lived. One of the persons from the group told the old Lady that they were hungry and would want to have some food. "There is a king who is famous for his generosity and offers food free of cost," she said. Listening to this, they were delighted and asked her where they can find him. But before they proceeded, the old lady warned them that if you go there you won't be able to return and further told about a group of people who had died earlier. This news created fear psychosis amongst them and they returned home. The king got to know that people feared to come to his place for any such event. He couldn't digest this and went into deep

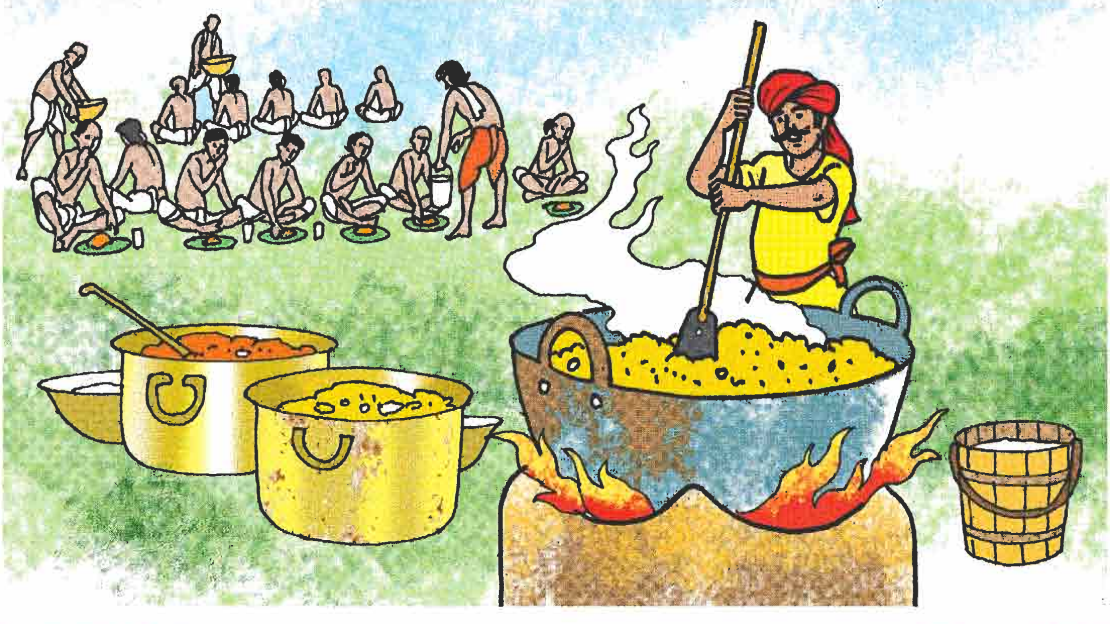

depression and one day passed away.

Up in the heaven Minister of Yama Dharma started counting King Vallabharaya's good and bad deeds to allot him a place in heaven or hell accordingly. He got confused and asked Yama Dharma whether they should consider the food charity as good or bad deed as many had died. Yama Dharma started explaining to Minister; the eagle was just carrying its food which was snake, so it was not at fault. Simultaneously the snake was trying to defend himself, so even snake cannot be blamed. The king was doing charity, so the king was kind. It is the old lady who had given half information to the group of people without enquiring about the reality is the guilty. She is at fault.

Email: aramudaniyanger@yahoo.com

गरम हवा की धूप

कमल सिंह चौहान

गरम हवा ने ली अँगड़ाई,
चारों तरफ अब धूप समाई।
सन्नाटे ने पैर जमाए,
सांय–सांय कर गरमी आई।

चिड़िया चोंच में पानी लाई,
मैना ने भी लोरी सुनाई।
सूरज ने तेवर दिखलाए,
सियार ने भी ढपली बजाई।

टेसू खिले बिछ गए सारे,
धरती पर हैं ढेर नज़ारे।
पानी ढूँढ़े सियार चीता,
धरती माता भी गरमाई।

धरती पर है शोर–शराबा,
बिन पानी घबराए बाबा।
मिलकर पानी को सब रोको,
वरना सबकी आफत आई।

"कविता निवास" स्टेशन रोड़, बीड़
खंडवा–450110 (म.प्र.)

Book Review

An illustrated story woven around celebrations, festivities, myths and facts associated with Kumbh.

Kumbhmela is held every three years at four places, Allahabad, now called Prayagraj, in Uttar Pradesh; Haridwar in Uttrakhand; Ujjain in Madhya Pradesh , and Nasik in Maharashtra. A Purna Kumbh is held every 12 years.

The author narrates experiences of Sooraj and Chandni as they visit Kumbh at Prayagraj with their grand father and mother.

Anita Bhatnagar Jain has a diverse spectrum of creative output in both English and Hindi- from Children's stories based on environment and morality, travelogues to policy research papers on disaster management and public administration, amounting to more than 40 publications.

Partha Sengupta is an accomplished illustrator of Children's books.

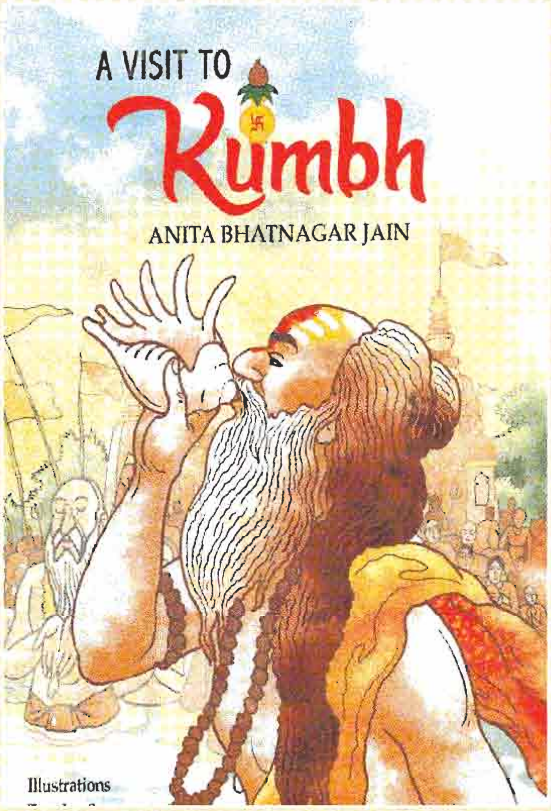

A VISIT TO KUMBH

Anita Bhatnagar Jain

National Book Trust, India

Pp 26 **Rs.50/-**

A graduate of the prestigious Government College of Art and Craft, Kolkata, he has illustrated more than hundred books including many for National Book Trust, India.

R.N.I. No. - 64771/96

You have 3 entry points. In the box, there are 3 deadly creatures and one diamond. Find the way to the diamond.

इस बॉक्स में प्रवेश के लिए यहाँ पर तीन बिन्दु दिए गए हैं। इस बॉक्स के तीन खानों में तीन खतरनाक जीव हैं तथा चौथे खाने में हीरा रखा हुआ है। इस कीमती हीरे तक कैसे पहुँचें?